द्वितीय अध्याय

प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों का कथ्य

2.1 प्रस्तावना :-

नाटककार अपनी कृति द्वारा जिन प्रश्नों को उठाता है, जिन समस्याओं का चित्रण करता है अथवा उसके द्वारा जो कहा गया है उसे कथ्य कहा जाता है 'इला' श्रोत्रिय जी का प्रकाशन काल की दृष्टि से प्रथम नाटक है। इसका प्रकाशन इ.स. 1989 में हुआ है।

2.1.1 'इला' कथावस्तु :-

विवस्वान (सूर्य) और संज्ञा के पुत्र मनु मानवजाति के आद्य-पुरुष माने जाते हैं। श्रद्धा मनु की सहधर्मिता-पत्नी, यह बात सर्वविदीत है। 'इला' की कथावस्तु 'भागवत पुराण पर आधारित है। इसे एक मिथक के रूप में देखा जाता है। राजा मनु राजगुरू वशिष्ठ मुनि की सहायता से 'पुत्रकामेष्टि यज्ञ' करवाते हैं। पुत्रकामेष्टि यज्ञ के पहले महारानी श्रद्धा की इच्छा का भी विचार किया जाता है। विद्याधर श्रद्धा की इच्छा के अनुसार पुत्री की कामना करता है और तब उन्हें सरस्वती देवी जैसी तेजस्वी पुत्री प्राप्त होती है। उसका नामकरण किया जाता है 'इला'।

दूसरी ओर मनु पुत्रप्राप्ति की अभिलाषा लेकर बैठे हैं। राज्य के सभी लोग इस खबर के कारण आनंदित है कि राजा मनु को पुत्र प्राप्त होने वाला है। राज्य के सभी लोग आनंदित हैं। ऐसी स्थिति में मनु को वास्तविक बात का पता चलता है। मनु पुत्र के स्थान पर पुत्री हुई है यह सोचकर अचंभीत हो जाते हैं। इस बात की खबर किसी को भी न लगे इसलिए श्रद्धा को चंद्रिका दासी की सहायता से उसके कक्ष में कैद कर देते हैं। वे वशिष्ठ जी से दूबारा यज्ञ करवाने की इच्छा व्यक्त करते हैं। राजगुरू वशिष्ठ अंत में तैयार हो जाते हैं और इला का

परिवर्तन (सुद्युम्न) पुत्र में कर देते हैं।

सुद्युम्न जैसे-जैसे बड़ा हो जाता है वैसे-वैसे मनु की चिंताएँ भी बढ़ जाती है। सद्युम्न युद्ध की कला सीखने के बजाए उद्यानों और वनों में घूमता रहता है उसे तलवार की अपेक्षा फूल पसंद है। वशिष्ठ मुनि की सलाह पर मनु सुद्युम्न का विवाह राजा धर्मदेव की पुत्री सुमति से करा देते हैं। तदुपरांत मनु सुद्युम्न का राज्याभिषेक करके तीर्थयात्रा पर चले जाते हैं। सुमति को कुछ ही दिनों बाद पता चलता है कि सुद्युम्न किसी चिंता में रहते हैं। इसी कारण सुमति सुद्युम्न को आत्महीनता त्यागकर राजकारोबार संभालने की सूचना देती है। सुमति की फटकार के कारण सुद्युम्न उत्तेजित होता है और नवीन आवेशों का अनुभव करता है।

राजा सुद्युम्न अपने साथियों के साथ शिकार पर निकलता है परंतु अलग दिशा में भटक जाता है उसके सारे साथी राजमहल की ओर चले आते हैं। वह एक वन में प्रवेश करता है जिसे 'शरवण' नाम से जाना जाता था। 'शरवण' में जाकर वह अनुभव करता है कि उसका सारा शरीर स्त्रीयोचित बन गया है। 'इला' बनकर वह अपने आपको संपूर्ण स्त्री अनुभव करता है। कुछ समय बाद उसी वन में चंद्र का पुत्र बुध इला को नजर आता है और वह उसके प्रति मोहित होती है। बुध भी उसके प्रति आकर्षित होता है, दोनों एक दूसरे का परिचय करवाकर शादी के बंधन में बंध जाते हैं। मनु सुद्युम्न की प्रतिक्षा में चिंतित हैं। वे वशिष्ठ जी से उत्तराधिकारी के बारे में बातचीत करते हैं। सुद्युम्न के वापस न आने के कारण सुमति दुःखी है। इला को बुध से एक तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति होती है। संयोग से वह वशिष्ठ जी के आश्रम में चली आती है। वशिष्ठ मुनि उसका नाम 'पुरुरवा' रख देते हैं। वशिष्ठ मुनि इला को फिर सुद्युम्न में परिवर्तित कर उसको राज्य की ओर जाने का आग्रह करते है।

सुद्युम्न वापस आकर जब राजकारोबार सँभालता है तब उसे पता चलता है कि राज्य के कर्मचारी भ्रष्ट और कामचोर बन गए हैं। प्रजा किसी पर भी विश्वास नहीं करती है। यह सुनकर सुद्युम्न महामंत्री को शासन कड़ा करने के साथ-साथ उन लोगों को समझाने का हुक्म देता है जो बेटी का आदर नहीं करते। सुद्युम्न को स्त्री की समस्याओं का वास्तविक बोध होता है। सुद्युम्न अपने अंदर की अस्थिरता और स्त्रीत्व को त्यागकर शक्तिशाली सम्राट बनने का प्रयास करता है। इसी कारण वह एक कठोर शासक बन जाता है। राज्य के कर्मचारी भ्रष्ट एवं कामचोर है इस बात का जब उसे पता चलता है तब उसे अपने अस्तित्व के बारे में शंका उत्पन्न होती है और वह दुःखी होता है। अंत में वशिष्ठ मुनि की पत्नी अरूंधती वशिष्ठ जी से धर्म और राजनीति को लेकर बातचीत करती है। अंत में विद्याधर अपने आप को उस कृत्य के लिए दोषी ठहराता है जिस समय इला का परिवर्तन सुद्युम्न में हुआ था। विद्याधर और सुद्युम्न की बातचीत से पुरुष-स्त्री के मनोविज्ञान पर प्रकाश पड़ता है। मनु वशिष्ठ जी की सहायता से इला के पुत्र पुरुरवा का राज्याभिषेक करवाते हैं। यहाँ पर नाटक समाप्त हो जाता है।

2.1.2 इला : कथ्य

प्रस्तुत नाटक 'इला' नामक स्त्री की व्यथा की कहानी है। इला एक राजपुत्री होकर भी शोषित एवं पीड़ित है। यह नाटक स्त्री समस्या को लेकर लिखा गया है। साथ ही साथ यह लिंग परिवर्तन जैसी भयानक समस्या की ओर भी इशारा करता है। इला उन नारियों का प्रतिनिधित्व करती है जो सदियों से प्रताड़ित एवं शोषित रही हैं। प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने निम्न समस्याओं का चित्रण किया है -

2.1.2.1 राजा महाराजाओं के कारोबार की वास्तविकता :-

नाटककार प्रभाकर श्रोत्रिय जी ने विवस्वान (सूर्य) और संज्ञा के पुत्र 'मनु' द्वारा प्राचीन राजा-महाराजाओं की राज-व्यवस्था का चित्रण किया है। प्राचीन काल में राज्य की पूरी व्यवस्था राजा द्वारा देखी जाती थी। राजा समाज का सर्वश्रेष्ठ सत्ताधारी होता था। अपनी इच्छा के अनुरूप सारी व्यवस्था बना लेता था। राजा के आश्रय में राजगुरु, राज कवि आदि लोग रहते थे। इन्हें राजा की इच्छा के अनुरूप व्यवहार करना पड़ता था। राजकवि राजा की मुक्तकंठ से प्रशंसा करता था। राजगुरू को राजा का मार्गदर्शन करने का काम करना पड़ता था लेकिन राजा अपने अधिकार के बलपर राजगुरू से ऐसे काम करवाता था जो प्रकृति के खिलाफ होते थे। प्रस्तुत नाटक में नाटककार श्रोत्रिय जी ने राजा मनु द्वारा इस व्यवस्था का चित्रण अत्यंत सफलता से किया है।

2.1.2.2 सदियों से प्रताड़ित एवं शोषित नारी :-

नाटककार श्रोत्रिय जी ने 'इला' इस नाटक में नारी को केंद्र में रखा है। सदियों से प्रताड़ित एवं शोषित नारी आज के युग में भी उपेक्षित है। उसकी इच्छाएँ एवं आकांक्षाओं की चिंता किए बिना किस प्रकार अधूरी छोड़ दी जाती है, उन्हें दबाकर रखना पड़ता है इसका वास्तविक चित्रण प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने किया है :

इला :- ''ओह ! कितनी बार देहांतरण की निर्मम
यातनाओं में से होकर जाना पड़ेगा मुझे।
कितनी विषम जैविक यात्राएँ.... घटित होंगी
मुझमें ! आप जानते नहीं है तात कि कैसी
असहय वेदना होती है !''[1]

राजा मनु की पत्नी श्रद्धा एक महारानी होकर भी अपनी इच्छा पूरी नहीं कर सकती है। श्रोत्रिय जी श्रद्धा के माध्यम से प्रचीनकाल की पीड़ित नारी का चित्रण करते हैं। आज का युग विज्ञान और उन्नति का युग होने के बावजूद नारी को उसके प्राथमिक अधिकारों से दूर रहना पड़ रहा है। श्रोत्रिय जी ने 'इला' को शोषित नारी

के रूप में चित्रित किया है।

2.1.2.3 लिंग परिवर्तन की समस्या :-

'इला' इस नाटक में श्रोत्रिय जी ने पौराणिक एवं ऐतिहासिक धरातल पर आधुनिक समस्याओं का चित्रण किया है। इसमें प्रमुख समस्या लिंग-परिवर्तन की है। जैसे-जैसे आधुनिकता बढ़ती गई वैसे-वैसे लोगों की मानसिकता भी बदल रही है। विज्ञान की तरक्की के कारण मानव प्रकृत्ति पर विजय प्राप्त करने के प्रयास में अघोरी कृत्य कर रहा है। सदियों से नारी उपेक्षित रही है। श्रोत्रिय जी ने भविष्य को वर्तमान में देखा है। उनका अप्रत्यक्ष रूप से कहना है कि आदमी विज्ञान के सहारे लिंग-परिवर्तन भी कर सकता है मगर यह प्रकृति के खिलाफ है। लिंग-परिवर्तन अगर कामयाब रहा तो कितने निष्पाप बच्चों को इस प्रक्रिया से गुजरना पड़ेगा। 'इला' के माध्यम से श्रोत्रिय जी ने इस गंभीर समस्या की ओर इशारा किया है। नाटककार ने लिंग परिवर्तन को लेकर संकेत दिए हैं -

"गुरूदेव ! आप चाहें तो पुत्री को पुत्र में बदल सकते हैं।"[2]

जिससे नारी की विवशता एवं पुरुषों की अहं भावना, अधिकार का दुरुपयोग नजर आता है।

2.1.2.4 सत्ता के गुलाम राजगुरू :-

प्राचीन काल में राजा के सलाहकार की भूमिका राजगुरू को निभानी पड़ती थी। सही क्या है ? गलत क्या है ? इन बातों का निस्पृहता के साथ राजा को परिचित कराने का काम राजगुरू को करना पड़ता था। राजा सर्व सत्ता का अधिकारी होता था। इसी कारण वह अपनी इच्छानुसार राजकारोबार चलाता था। फलतः समय-समय पर राजगुरू को सत्ता के आगे झुककर ऐसे काम करने पडते थे जो प्रकृति के खिलाफ होते थे। प्रस्तुत नाटक में वशिष्ठ मुनि अपने मन के विरूध्द लिंग-परिवर्तन कराने के लिए तैयार हो जाते हैं उनका कथन दृष्टव्य है -

"तो..... तुम किसी भी मूल्य पर यह चाहोगे ! परंतु सुन लो, आकृति के साथ प्रकृति का पूरी तरह बदलना असंभव है और....."[3]

इस व्यवस्था से श्रोत्रिय जी ने आधुनिक काल के उन चुनीदे लोगों की तरफ इशारा किया है जो कि मनु जैसे हैं और अपने स्वार्थ सिद्धि हेतु वैज्ञानिकों का अधिकार के बलपर गलत इस्तमाल कर रहे हैं।

2.1.2.5 प्रकृति से खिलवाड :-

प्रकृति हमेशा मानव की सहायक रही है। किंतु कभी-कभी अपना रौद्र रूप भी दिखाती आई है। विज्ञान के आधार पर मानव कितनी भी उन्नति क्यों न करें प्रकृति मानव से हमेशा आगे रही है और रहेगी भी यह बात

नाटककार स्पष्ट करना चाहते हैं। लिंग-परिवर्तन यह प्रश्न भविष्य में मानव के सामने खड़ा हो सकता है ? प्रस्तुत नाटक में श्रोत्रिय जी ने मनु और श्रद्धा के माध्यम से इस समस्या को सबके सामने लाया है मनु एक राजा है। उन्हें अपने उत्तराधिकारी की अभिलाषा है। परंतु महारानी श्रद्धा एक पुत्री चाहती हैं और वह एक सुंदर कन्या को जन्म देती है। यह बात सुनकर मनु आश्चर्यविभोर हो जाते हैं और राजगुरू वशिष्ठ मुनि की मदद से यज्ञ द्वारा उस कन्या को एक 'पुत्र' (सुद्युम्न) में बदल देते हैं। असल में यह प्रकृति से खिलवाड है। प्रकृति से खिलवाड करने से मनु को उसकी कीमत चूकानी पड़ेगी यह वशिष्ठ के कथन से स्पष्ट होता है। वे कहते हैं - ''हठ न करो महाराज ! तुम्हें, तुम्हारी प्रजा को और भावी पीढ़ियों को ऐसे दुष्कर्म का भारी मूल्य चुकाना पड़ेगा।''[4]

2.1.2.6 पक्षपाती राजा मनु :-

सत्ताधारी राजा जब प्रजा के सामने आ जाता है तब वह बड़ा आदर्शवादी बन जाता है और यह आवश्यक भी होता है। राजा अपने व्यक्तिगत जीवन में इस आदर्श का पालन करता है या नहीं यह दिखाई नहीं देता। राजा मनु का यह पक्षपाती स्वभाव उनके कथन से स्पष्ट होता है। वे इला से कहते हैं -

''दूसरों की कन्याओं से प्रेम करना और अपने लिए कन्या चाहना दो अलग बाते हैं, देवी !''[5]

राजा मनु भी ऐसे ही व्यक्तित्ववाले राजा हैं। जब सामाजिक समारोह होते हैं ऐसे मौके पर वे लड़कियों के प्रति अपना प्रेम जताते हैं लेकिन खुद की बेटी 'इला' को पुत्र में परिवर्तित करवा देते हैं। आज के सत्ताधारी राजनेता भी इसी प्रकार के होते हैं। इस ओर श्रोत्रिय जी इंगित करते हैं।

2.1.2.7 प्रकृति महाशक्ति है :-

मानव दिन-ब-दिन विज्ञान के बल पर उन्नति के नये-नये शिखर छू रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पचास सालों में हमने काफी उन्नति की है। इसके पीछे मानव की इच्छाशक्ति और विज्ञान का सहारा है। श्रोत्रिय जी ने प्रस्तुत नाटक में लिंग-परिवर्तन जैसी घटना दिखाई है। आज तक ऐसा कुकर्म कभी नहीं हुआ। प्रस्तुत नाटक में वशिष्ठ प्रकृति का महत्व मनु को बता देते हैं -

''नहीं महाराज ! मुझे धर्म-संकट में मत डालो ! प्रकृति महाशक्ति है। वह साधना का सम्मान करती है .....संसार के कल्याण के लिए अपने अजाने रहस्य तक खोल देती है वह। परंतु विनाश और विकृति वह सहन नहीं कर सकती।''[6]

श्रोत्रिय जी भविष्य की ओर इशारा करते हैं अगर ऐसा कुकर्म यदि हुआ तो जिसप्रकार इला से परिवर्तित सुद्युम्न की अवस्था हुई उसी प्रकार की अवस्था परिवर्तित पुरुष या स्त्री की होगी। प्रकृति हमेशा समय-समय पर

अपना रौद्र रूप दिखाती है। जिस इला का परिवर्तन सुद्युम्न में हुआ था उसमें स्त्रियोचित गुण विद्यमान थे। वह अपने आपको पूर्ण पुरुष नहीं मानता था। प्रकृति महाशक्ति है यहाँ पर प्रकृति की विजय दिखाई गई है।

निष्कर्ष

नाटककार श्रोत्रिय जी ने इला के माध्यम से नारी की समस्याओं के साथ-साथ लिंग-परिवर्तन जैसी गंभीर समस्या की ओर इशारा भी किया है। आज हम 21 वी सदी में जी रहे हैं। आज स्त्री को पुरुष के बराबर माना जाता है। वह पुरुष के कंधे से कंधा भिड़ाकर काम में लगी हुई है। हर क्षेत्र में वह पुरुष के बराबर है। फिर भी आज स्त्रियों की हत्याएँ होती है। नाटककार श्रोत्रिय जी ने इक्कीसवीं सदी की नारी की दुर्दशा पर प्रकाश डाला है। स्त्री की पीड़ा के साथ तथाकथित राजनेताओं की मानसिकता पर प्रकाश डालते हैं। आज के उन राजनेताओं की ओर वे इशारा करना चाहते हैं जो मनु जैसा व्यवहार करते हैं। साथ ही प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना मानव को पीड़ादायक हो सकता है। मानव कितनी भी उन्नति क्यों ने करें प्रकृति पर कभी विजय प्राप्त नहीं कर सकता। प्रकृति महाशक्ति है इस बात पर उन्होने प्रकाश डाला है। अतः श्रोत्रिय जी का 'इला' यह नाटक कथ्य की दृष्टि से उनकी सफल कृति मानी जाती है।

2.2 'साँच कहूँ तो' : कथावस्तु

साँच कहूँ तो यह श्रोत्रिय जी का प्रकाशन काल की दृष्टि से दूसरा नाटक है। यह मध्यकालीन प्रेम काव्य 'बीसलदेव रासो' पर आधारित है। इसमें कुल तीन अंक और चौदह दृश्य हैं। नाटककार ने मध्यकालीन ऐतिहासिक कथावस्तु के आधार पर आधुनिक समस्याओं का चित्रण किया है।

नाटक की शुरूआत पूर्व रंग से होती है। पूर्व रंग में लोकगायक और विदुषक मंगलाचरण गाते हैं। इसके साथ ही लोकगायक द्वारा श्रोत्रिय जी ने कथावस्तु के पूर्व संकेत भी दिए हैं। नाटक के पहले अंक के प्रारंभ में राजा भोज और भानुमती को दिखाया गया है। भानुमती अपनी बेटी राजमती की शादी की बात भोज से करती है। राजा उचित वर ढूँढ़ने के लिए दूतों को चारों दिशाओं में भेज देता है। दूतों की जानकारी के अनुसार अजमेर के राजा बीसलदेव के साथ राजमती का विवाह तय करने की बात दोनों सोचते हैं। शादी की बातचीत करने हेतु राजा अपने राज्य के पंडित को अजमेर भेज देता है। राजमती की सखियों को जब यह खबर मिल जाती है तब सखियाँ उसे परिहास द्वारा तंग करती हैं। दूसरी ओर राजा बीसलदेव के मित्र उसके विवाह को लेकर बातचीत कर रहे हैं। बीसलदेव अपने मित्रों के सामने राजमती की तारीफ करता है। उसके परम सुंदर रूप का गुणगान करता है। विधिवत बीसलदेव और राजमती का विवाह संपन्न होता है। राजमती की माता भानुमती राजमती को

गले लगाकर अपने कुल की लाज रखने का आह्वान करती है।

दूसरे अंक के प्रारंभ में बीसलदेव और राजमती के प्रणय प्रसंग का वर्णन किया गया है। राजमती प्रणय के बजाय बीसलदेव को अपने साथ खेलने का आग्रह करती है। राजमती बात-बात में बीसलदेव की मूँछे कटवाने की बात करती है। बीसलदेव क्रोधित होकर अपने चक्रवर्ती राजा होने पर गर्व करता है। राजमती राजा के अहं को ठेस पहुँचाकर उसे उडीसा के नरेश से कम आँकती है। उड़ीसा के नरेश के पास हीरे होने की जानकारी वह बीसलदेव को देती है। राजमती की फटकार केकारण बीसलदेव उससे क्रोधित होता है। बीसलदेव को चिंतित देखकर इंद्रावती भी चिंतामग्न हो जाती है। राजा बीसलदेव राजमती का घमंड तोड़ने हेतु उसको बुलाकर उड़ीसा जाकर बारह बरसों तक वापस न आने का और हीरे लाने का प्रण करता है। राजमती बीसलदेव को न जाने का आग्रह करती है। बीसल को अपने निर्णय पर अड़ीग देखकर वह जान देने का ड़र भी दिखाती है। बीसल उसकी कोई बात नहीं सुनता। इंद्रावती भी उड़ीसा की ओर जाते हुए राजा को रोकने का प्रयास करती है परंतु राजा उसकी भी बात नहीं सुनता। राजमती अपनी सखियों के साथ ज्योतिषी के पास चली जाती है क्योंकि वे कोई उपाय ढुँढ़ने में मदद करेंगे। बीसलदेव पहले पंडित पर क्रोधित होकर उसे यात्रा पर निकलने के लिए मुहूर्त निकालने का आदेश देता है। पंडित जब चार मास तक कोई प्रवास का योग न होने की खबर देता है तब बीसल पंडित का आग्रह ठुकराकर दूसरे ही दिन प्रवास पर निकलने का फैसला करता है। यात्रा पर निकलने के वक्त राजमती बीसलदेव को दो-चार ज्ञान की बातें बता देती हैं और राजा के चले जाने से व्याकुल हो उठती है।

राजा बीसल को गए दस साल पूरे हुए। इतने सालों में रानी राजमती किशोरी से युवती हो गई मगर उसके शरीर का विकास नहीं हो सका। राजा बीसल के विरह के कारण उसके शरीर में सिर्फ हड्डियाँ बची थी। उड़ीसा की ओर जाते हर राहगीर को वह राजा के कुशल-मंगल के बारे में पूछती रहती। रानी की यह अवस्था देखकर उसकी मामीसा कुटनी उसके मन को सहारा देती है। कुटनी राजमती को बीसलदेव के बारे में उल्टी-सीधी बातें बताती है। राजमती को किसी अन्य पुरुष के साथ रात काटने की सलाह देती है। यह बात सुनकर राजमती क्रोधित होकर पाटा उठाती है और उसकी पीठ पर मारती है। राजमती हारकर परमात्मा का आह्वान करती है। ऐसी अवस्था में पंडित के प्रवेश करने से राजमती आनंदित हो जाती है। पंडीत जी को उड़ीसा जाने का आग्रह करती है राजमती के आग्रह को मानकर पंडित जी उसकी चिट्ठी लेकर उड़ीसा की ओर प्रयाण करते हैं। अनेक रूकावटों का सामना करके पंडित जी उड़ीसा के महल में पहुँच जाते हैं। उड़ीसा नरेश के सामने जाकर अपने ब्राह्मण होने तथा एक व्यक्ति की खोज में आने की बात राजा से करते हैं। उड़ीसा नरेश पंडित जी का पर्याप्त आदर सत्कार करते हैं। पंडित जी बीसल को देखकर उसे पहचान लेते हैं मगर चूप रहते हैं। दूसरे कक्ष में बीसल को ले जाकर उसे अपनी पहचान बता देते हैं। पंडित बीसल को राजमती की स्थिति बताकर उसे जल्दी से जल्दी

अजमेर जाने का आग्रह करते हैं।

राजा बीसल उड़ीसा के राज्य में वास्तव्य करनेवाले योगी के पास चले जाते हैं। बीसल योगी को अजमेर की ओर जाने का आग्रह करता है। योगी राजा बीसल का संदेश लेकर अजमेर की ओर चला जाता है। उड़ीसा नरेश को राजा बीसल के बारे में सब समाचार मिल जाता है। उड़ीसा नरेश बीसल को बुलवाकर उसके रहने के प्रयोजन को जान लेते हैं। हीरों की आशा से कोई राजा इतने सालों तक अपने राज्य में कैसे रहा इस घटना से राजा अचरज में पड़ जाता है। उड़ीसा की महारानी इतने सालों तक रहे बीसल को अपना भाई मानती है। उसे अजमेर की ओर न जाने का आग्रह करती है। परंतु राजमती की दयनीय अवस्था को सुनकर उड़ीसा नरेश बीसल को चारसौ ऊँटों पर हीरे लादकर अजमेर की तरफ भेज देते हैं।

उधर अजमेर में राजमती बीसल की प्रतीक्षा में हैं। वहाँ पर योगी प्रवेश करता है। राजमती की तीखी बातें सुनकर उसे पहचान लेता है और उसे राजा के आने की खबर देता है। महारानी राजमती आनंदविभोर हो उठती है। अंतिम दृश्य में सखियाँ महाराज बीसल के आने की खबर सुनकर गीत गाने लगती है। सारा महल सजाया जाता है। महाराज बीसल के आने के बाद राजमती सबसे पहले उसकी आरती उतारती है और राजा से वाद-विवाद करती रहती है। हीरे लाने की खबर बीसल जब उसको देता है तब राजमती उसको फिर फटकारती है। उसे हीरों के बजाए बीसलदेव प्रिय हैं। इसी अवस्था में दोनों बातें करते करते अचल हो जाते हैं। यहाँ पर नाटक की समाप्ति होती है।

2.2.1 'साँच कहूँ तो' : कथ्य

'साँच कहूँ तो' की कथा राजस्थान की आम लोक-कथाओं जैसी है, जिसमें पति-पत्नी के अनुनय विनय को ठुकराकर धन कमाने के लिए यात्रा पर निकल पड़ता है - और वह भी बारह वर्ष के लिए। वियोगिनी पत्नी पति के वियोग में रोती रहती है। इस बीच उसे अपने चरित्र की रक्षा करनी पड़ती है और जरूरत पड़ने पर प्रमाण भी देना पड़ता है लेकिन पति के बारे में ऐसा कोई सवाल नहीं उठाया जाता। यात्रा से लौटने पर पत्नी सब कुछ भूलकर पति को अपना तन एवं मन अर्पित कर देती है।

2.2.2 कथ्य :

श्रोत्रिय जी प्रस्तुत कथानक द्वारा मध्ययुगीन राज-व्यवस्था का चित्रण, अनमेल विवाह की समस्या, वाचाल रानी राजमती, स्वाभिमानी प्रजा बीसलदेव, राजमती का विरह, मध्ययुग की पीड़ित नारी, एवं वचनबद्ध राजा बीसलदेव, युवकों की विदेश जाने की प्रवृत्ति आदि बातों को स्पष्ट किया है।

2.2.2.1 मध्ययुगीन राज-व्यवस्था का चित्रण :-

नाटककार श्रोत्रिय जी ने मध्ययुगीन राज-व्यवस्था का चित्रण प्रस्तुत नाटक में किया है। मध्यकाल भोग और विलास का काल था। ऐसे काल में बीसलदेव जैसे राजा द्वारा नाटककार तत्कालीन राजा-महाराजाओं की मानसिकता का चित्रण करना चाहते हैं। बीसलदेव शूर-वीर राजा है फिर भी वह भोगवादी और विलासी है। अपनी एक पत्नी होने के बावजूद वह राजमती जैसी किशोरी से विवाह करता है। यहाँ उसकी भोगवादी प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। बीसलदेव घमंडी भी है। जिस प्रकार तत्कालीन अन्य राजा अपने बीस-पचास गावों को ही अपना राष्ट्र समझते थे उसी प्रकार बीसलदेव भी अपने बीस-पचास गावों को ही राष्ट्र समझता था। साथ ही वह अपने आपको चक्रवर्ती राजा कहलाता था। इस प्रकार मध्य-युगीन राज-व्यवस्था का वास्तविक चित्रण नाटककार ने प्रस्तुत नाटक द्वारा किया है।

2.2.2.2 अनमेल विवाह की समस्या :-

किशोरी राजमती का विवाह अधेड़ उम्र के राजा बीसलदेव के साथ किया जाता है। इतनी उम्र होने के बावजूद एक राजा होने के कारण राजमती का विवाह उसके साथ किया जाता है। मध्ययुग में इसी तरह ज्यादातर अनमेल विवाह होते थे। राजा बीसलदेव और राजमती के इस अनमेल विवाह का चित्रण नाटककार ने लोकगायक के के द्वारा किया है -

> "लाडी बारा बरस की चाली से से ब्याव।
> विधना अब तू ही बता कैसा तेरा न्याव।"[7]

जिस समाज में राजा ही नियमों का उल्लंघन करता हो उस समाज के आम लोगों से क्या अपेक्षा की जा सकती है। मध्यकाल में जिस प्रकार राजा बीसलदेव ने राजकुमारी राजमती के साथ अनमेल विवाह किया था, उसी प्रकार उसके समकालीन ऐसे अनेक राजा थे जिन्होने एक से जादा अनमेल विवाह किए थे। राणी राजमती की उम्र खेलने की उम्र थी। उसे इस बात का भी पता नहीं था कि पति क्या होता है ? उसके साथ पत्नी को किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए ? ऐसे में उसका विवाह किया जाता है। वह राजा से अयोग्य बातें करती है। अनमेल विवाह की प्रथा पर प्रकाश डालने का काम श्रोत्रिय जी ने प्रस्तुत नाटक में किया है।

2.2.2.3 राजमती का चित्रण :-

राणी राजमती का विवाह बीसलदेव के साथ छोटी उम्र में ही किया जाता है। राजमती अपने माता-पिता के पास निड़रता और निर्भयता से रहती थी उसी प्रकार वह अपने पति बीसलदेव के राजमहल में भी रहती है।

बीसलदेव एक राजा था लेकिन राजमती यह बात इतनी गंभीरता से नहीं लेती थी। वह बीसलदेव के साथ निड़रता से बातें करती है। एक पत्नी को अपने पति के साथ किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए इस बात का पता उसे नहीं था। वह राजा से कहती - "राजाजी, तुमने अपनी मूँछे नहीं मुड़वाई ?" राजा बीसल जब उसको बताता है कि मैं एक चक्रवर्ती राजा हूँ तब उसकी प्रतिक्रिया भी उतनी ही तीखी नजर आती है। वह राजा से कहती है - "चक्रवर्ती तो राजा राम थे। तुम और चक्रवर्ती !"[8] इस प्रकार एक राजा के सामने बात करना किसी आम आदमी का काम नहीं था। राजमती निड़र होने के कारण राजा से इसप्रकार का व्यवहार करती है। इतना ही नहीं तो वह बीसलदेव को भड़काकर उसके अहं को ठेस पहुँचाती हैं।

2.2.2.4 स्वाभिमानी राजा बीसलदेव :-

वाचाल रानी राजमती राजा बीसलदेव के अहं को भड़काती है। इसी कारण राजा का स्वाभिमान जागृत हो जाता है। इसके पहले राजा बीसलदेव अपने आपको भारतवर्ष का सर्वश्रेष्ठ चक्रवर्ती राजा रमझता था। लेकिन राजमती उसके अहं को ठेस पहुँचाती है। वह बीसलदेव से कहती है कि "तो सुनो ! देश उडीसा का नाम सुना है ? तो जान ले, थारे राज में तो बस नमक निकलता है, उसके राज में हीरे निकलते हैं ! हीरों की खाने हैं। अब बता तू बड़ा या वो राजा ? बीसलदेव के राज्य में नमक तैयार होता था, राजमती की इस तरह की बातें सुनते ही बीसलदेव प्रण करता है -

"बारह बरस छोड़कर तुझको हे गोरी देस उड़ीसा के प्रवास पर कल जाऊंगा। अपना अपमान नहीं सह सकता है बीसल आऊँगा तो हीरे लेकर ही आऊँगा।"[9]

अपने प्रण के अनुसार वह रानी को अपना शौर्य दिखाने हेतु उड़ीसा राज्य में चला जाता है और वहाँ पर लगभग बारह साल रहने के बाद हीरों की मुहरों से लदें चारसों ऊंट लेकर वापस आता है। इससे बीसलदेव एक स्वाभिमानी राजा था यह बात स्पष्ट होती है।

2.2.2.5 राजमती का विरह वर्णन :-

राजमती बीसलदेव की दूसरी राणी थी। दूसरी रानी राजमती कम उम्र की थी। किशोरी होने के बावजूद राणी राजमती राजा बीसलदेव के अहं को ठेस पहुँचाती है। उसे उड़ीसा के राजा को परास्त करके हीरे लाने की मांग करती है। रानी की इस फटकार के कारण वह राजमहल, ऐशो-आराम सब कुछ छोड़कर उड़ीसा राज्य की ओर चला जाता है। बीसलदेव के उड़ीसा चले जाने के कारण राजमती को उसका विरह सहना पड़ता है। उड़ीसा के राज्य में राजा बीसलदेव लगभग बारह सालों तक आवास करता है। इतने दीर्घ समय में राणी राजमती

बीसलदेव के विरह में एक मछली की तरह राजमहलों की दीवारों के अंदर तड़पती रहती है। उसे भूख भी नहीं लगती और नींद भी नहीं आती। उसे सारे भोग-विलास से नफरत है। सारा वातावरण उसे उदास-उदास नजर आता है। नाटककार ने पंडित के दूवारा राजमती के विरह का वर्णन किया है। पंडित कहते हैं -

''आप श्रीमानों का स्याव ही ऐसा है कि पंडित भी मूरख बन जाता है! अरे अन्नदाता वह तो बारी में बैठी-बैठी माला पिरोती रहती है और आपका नाम जपती रहती है। उसके माथे की राखड़ी और कानों के कुंडल उदास हैं, पायल ने मौन व्रत धारण कर रखा है। उसका चित्त निर्मल जल जैसा है -''[10]

उसकी अवस्था अत्यंत दयनीय हो जाती है। वह सिर्फ एक हड्डियों से बने पिंजरे के समान नजर आती है। इस प्रकार श्रोत्रिय जी ने विरह में मग्न राजमती का वर्णन किया है।

2.2.2.6 **राजमती : मध्ययुगीन पीड़ित नारी :-**

राजमती महारानी होने के बावजूद मध्ययुग की पीड़ित नारी का प्रतिनिधित्व करती है। वह साधारण नारी न होकर महारानी है फिर भी लगभग बारह साल उसके भाग्य में पतिसुख नहीं था। वह पति के विरह में मछली की तरह तड़पती है। विवाह के समय उसकी उम्र बहुत कम थी उसके उपरांत बारह सालों तक उसे पति के अलावा राजमहलों में समय बिताना पड़ता है। राजमती बीसलदेव से स्वयं अपनी पीड़ा कहती है -

''हे स्वामी! तू तो इतना कह कर उबर गया! तुझे क्या मालूम मैंने वियोग का सागर कैसे पार किया? बारह बरसों के पहाड़ कैसे लाँघे? कैसी-कैसी अग्नि परीक्षाएँ दी है मैंने! चढती जवानी को कलंक से कैसे बचाया?''[11]

राजमती एक रानी होकर भी पीड़ित एवं शोषित है। तत्कालीन समाज में नारी को सिर्फ भोग्या के रूप में देखा जाता था। बहुविवाह की प्रथा समाज में मौजुद थी। नारी को किसी भी प्रकार का स्वातंत्र्य नहीं दिया जाता था। राजमती मध्ययुग की एक प्रतिनिधि नारी के रूप में पाठकों के सामने आती है। मध्ययुग में पूरे भारतवर्ष में बीसलदेव जैसे अनेक राजा राज्य करते थे। राजा सर्व सत्ता का अधिकारी होने के कारण वह अनेक विवाह करता था। राजमती के साथ भी यही हुआ और उसे राजा के हठवादी स्वभाव के कारण बारह सालों तक विरह सहन करना पड़ा। अतः श्रोत्रिय जी राजमती को मध्ययुगीन पीड़ित नारियों का प्रतिनिधि चरित्र बनाने में सफल हुए हैं।

2.2.2.7 **दृढ़संकल्पी बीसलदेव :-**

राजा बीसलदेव किशोरी राजमती के साथ विवाह करता है। यह उसका दूसरा विवाह और राजमती उसकी दूसरी पत्नी थी। रानी राजमती निड़र एवं फक्कड़ स्वभाव की थी। इसी कारण राजा बीसल के साथ

निड़रता से बातें करती है। उड़ीसा के नरेश तुमसे श्रेष्ठ है इस प्रकार की बात उससे करती है। राजा बीसल भी स्वाभिमानी राजा है। रानी की फटकार के कारण वह उड़ीसा जाकर वहाँ से हीरे लाने और बारह सालों तक वापस न आने का प्रण करता है। उड़ीसा नरेश राजा बीसलदेव से अपने राज्य की ओर लौट जाने की बिनती करते हैं मगर राजा बीसलदेव अपनी प्रतिज्ञा भूला नहीं है वह कहता है - "हमारे पुरखे कलंकित हो जाएँगे। वचन की रक्षा के लिए उन्होने प्राण दे दिए। दशरथ, भीष्म, हरिश्चंद्र...."[12] उड़ीसा में जाकर वहाँ लगभग ग्यारह सालों तक रहने के बाद उड़ीसा नरेश से हीरे लेकर वापस आता है।

यहाँ पर श्रोत्रिय जी ने एक दृढसंकल्पी हिंदू राजा का चित्रण किया है।

2.2.2.8 युवकों की विदेश गमन की प्रवृत्ति :-

बीसलदेव धन की अपेक्षा से उड़ीसा राज्य की ओर चला जाता है। वहाँ पर लगभग ग्यारह सालों तक वह रहता है। श्रोत्रिय जी बीसलदेव के माध्यम से हमारे देश के नवयुवकों की धनलोलुप प्रवृत्ति पर प्रकाश डालना चाहते हैं। हमारे देश के ज्यादातर नवयुवक पढ़ाई के बाद पाश्चात्य देशों में नौकरी करना चाहते हैं। वहाँ जाने के बाद उन्हें खूब धन प्राप्त होता है। दस बारह साल वहाँ रहकर पर्याप्त धन कमाने के बाद वे वापस आते हैं। नाटककार इन्हीं नवयुवकों की धनलोलुपता स्वार्थीवृत्ति, विदेश का प्रलोभन एवं देशाभिमान की कमी को सूचित करना चाहते हैं।

इस प्रकार श्रोत्रिय जी ने प्रस्तुत नाटक में 'बीसलदेव रासो' की राजस्थानी ऐतिहासिक कथा के आधार पर अनेक वर्तमान समस्याओं का चित्रण किया है।

2.3 'फिर से जहाँपनाह' : कथावस्तु

'फिर से जहाँपनाह' प्रकाशन काल की दृष्टि से श्रोत्रिय जी का तीसरा नाटक है। इसका प्रकाशन इ.स. 1997 में हुआ। प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने 21 वीं सदी के लोकतंत्र तथा 18 वीं सदी की मध्ययुगीन राज्यव्यवस्था अर्थात तानाशाही का चित्रण अत्यंत सफलता से किया है।

नाटक के प्रारंभ में कबीर आम आदमी की पीड़ा को व्यक्त करता है। उसका कथन है कि आम आदमी हमेशा रौंदा गया है, शासक बदलने से उसकी आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति नहीं बदलती। राजनेताओं पर टिप्पणी भी कबीर करता है। प्रस्तुत अंक में अनंत चक्रवर्ती के सरकार का चित्रण किया गया है। त्यागमूर्ति धन-धंदा कमीशन मंत्री है, गुणगान सचिव है, मंगलम कारावास मंत्री है, अब्दुल्ला विद्रोही पार्टी का एक नेता है, वर्मा गृह-वित्तमंत्री है और कबीर आम आदमी का प्रतिनिधि है। स्त्री पात्रों में वसुंधरा विद्रोही पार्टी का एक नेता

है तथा जुही प्रधान की स्टेनो है। बाकी पत्रकारों का चित्रण हैं। शुरूआत में कुछ विद्रोही पार्टी के लोग अनंत चक्रवर्ती की सरकार के खिलाफ नारे लगाते हैं और बहस करते हुए चले जाते हैं।

अगले दृश्य में त्यागमूर्ति और मंगलम एक-दूसरे से बातचीत कर रहे हैं। मंगलम चक्रवर्ती के बंगले की तरफ जा रहा है। चक्रवर्ती फोन पर बात कर रहे हैं किसी चपरासी की नियुक्ति के लिए त्यागमूर्ति को नियम शिथिल करने का आदेश देते हैं। विद्रोही पार्टी का एक नेता कश्यप जी को मारने का आदेश चक्रवर्ती मंगलम को देते हैं। जबसे अनंत चक्रवर्ती की सरकार सत्ता पर है तबसे देश की हालत बीगड़ी हुई है। खाद्यानों की कीमतें चरमसीमा पर हैं और मनोरंजन की वस्तुओं जैसे कम्प्युटर, टी.व्ही. की कीमतों में बाटा जा रहा है। इसी कारण पत्रकार चक्रवर्ती का साक्षात्कार लेना चाहते हैं। चक्रवर्ती को पत्रकार ऐसे प्रश्न पूछते हैं जिनके उत्तर उनके पास नहीं है। पत्रकारों से निराश होकर चक्रवर्ती 'समय सारथी' नामक समाचार पर निर्बंध लगाते हैं। विद्रोही पार्टी का एक नेता कश्यप का कत्ल चक्रवर्ती करवाते हैं और कुछ ही समय में शोक-संदेश भी सुनाया जाता है। ''राष्ट्रीय कारावास अभिभावक संस्थान'' के लिए कालिका प्रसाद नामक एक गुंडे को अध्यक्ष बनाया जाता है। अगले दृश्य में चक्रवर्ती निजी स्टेनो जुही के साथ कामक्रीडा में लगे हुए हैं इतने में अकरम जिनी सचिव त्यागमूर्ति के आने की खबर उन्हें देता है। त्यागमूर्ति वर्मा के बनाए हुए आर्थिक बजट के बारे में चक्रवर्ती को सचेत करके चला जाता है। वर्मा चक्रवर्ती के बंगले में प्रवेश करते हैं। वर्मा का बनाया बजट पूँजीपतियों के खिलाफ था इसलिए चक्रवर्ती उसपर क्रोधित हैं। पूँजीपतियों को यदि खुश नहीं किया तो अगले चुनाव में उनको पराजय नजर आती है। चक्रवर्ती वर्मा को बजट के दुष्परिणामों के बारे में बताते हैं। दूसरी तरफ विद्रोही पार्टी के नेता अगले चुनाव में कुर्सी पाने की इच्छा लिए हुए हैं। उसमें बलवान वसुंधरा, अब्दुल्ला आदि नेतागण हैं। विद्रोही पार्टी के नेता सत्ताधारी सरकार के खिलाफ षड़यंत्र में लगे हुए हैं। तब उन्हें पता चलता है कि 'समय -सारथी' अखबार पर प्रतिबंध लगाया गया है। यह खबर उन्हें अच्छी लगती है। वे इसके सहारे लोगों को सरकार के खिलाफ भड़का सकते हैं। दूसरे ही दिन जुही के गायब होने और 'समय सारथी' पर निर्बंध डालने की खबर सभी अखबारों में छपती है। चक्रवर्ती और त्यागमूर्ति मिलकर सारा इल्जाम वर्मा पर डाल देते हैं। आगे वर्मा मंगलम को शेयर घोटाले में फँसा देता है। मंगलम, त्यागमूर्ति और चक्रवर्ती वर्मा से ऊब चुके हैं इसी कारण राजपट्टन के दौर पर जानेवाले वर्मा को मारने का काम कालीका प्रसाद को सौंप देते हैं। चक्रवर्ती पर अन्य नेता जुही पर बलात्कार एवं कत्ल का आरोप करते हैं। इसके लिए चक्रवर्ती स्वयं एक जाँच आयोग बिठा देता है। पर आखिर में यह आयोग चक्रवर्ती को निर्दोष और गृह-वित्त मंत्री वर्मा को मृत्युदंड तथा सुश्री वसुंधरा और कबीर को आजीवन कारावास की सजा सुनाता है। साथ ही मंगलम, त्यागमूर्ति और कालिका प्रसाद को दोषमुक्त किया जाता है। पहले अंक के अंतिम दृश्य में 2017 के चुनाव का चित्र हैं यहाँ पर बताया गया है कि चुनाव पाँच के बदले ड़ेढ़ दो सालों में

होंगे तथा प्रजातंत्र और तानाशाही की तुलना की गई है। यहाँ पर प्रथम अंक समाप्त होता है।

द्वितीय अंक में तानाशाही का मतलब समझाते हुए 18 वीं सदी की राज-व्यवस्था का चित्रण किया है। इसमें तानाशाह के रूप में आदमशाह का चित्रण किया है। शफीखान आदमशाह का सलाहकार है। कासिम खान दारोगा, असदुल्ला सिपहसालार, मंगल सिंह वजीरे आजम, नूरशाह आदमशाह का भाई, कबीर आम आदमी, हाजरा मलिका-ए-आलिया, सई नृत्यांगना तथा शाह की प्रेमिका के रूप में दिखाई गई है। सबसे पहले कबीर मंच पर आकर देश की सामयिक स्थिति को चित्रित कर रहा है। यहाँ पर वह तानाशाही की गलतियाँ बता रहा है। दरबार की शुरूआत में कवि जुगनू आदमशाह की तारीफ में कविताएँ सुनाते हैं। वजीरे आजम मंगलसिंह ऐसी किताबों का जिक्र करते है जो किसानों पर लिखी हैं मगर ये किताबे शाह को पसंद नहीं है। मंगलसिंह कुछ गुनहगारों को दरबार में पेश करते हैं शाह उनमें से जो खतरनाक गुनहगार और भ्रष्ट लोग हैं उन्हें छोड़ देते हैं और एक शिक्षक को फाँसी की सजा दी जाती है। सजा सुनाने के बाद आदमशाह सईदा को लेकर चले जाते हैं। कक्ष में सईदा उनके सामने नृत्य करती है इतने में आदमशाह की पत्नी मलिका-ए-आलिया वहाँ पर आती है। शाह की बेफीकिरी पर वह नाराज है। उसपर सईदा का नृत्य मलिका-ए-आलिया आलमशाह से बिनती करती है कि लोगों की तकलिफें दूर करने के लिए एक आदमी की नियुक्ति की जाए। वह नूरशाह का नाम आगे कर देती हैं। इसमें आलमशाह को शक होता है कि अपनी कुर्सी की तरफ नूरशाह की निगाहें लगी है। इतने में आदमशाह के खिलाफ नजदीक के चार राज्य मिलकर हमला करने का तय करते हैं। यह खबर गुप्तचर शाह को दे जाता है। आदमशाह सिपहसालार असदुल्ला को बुलाकर इसके बारे में सचेत कर देते हैं। आदमशाह के आदेशानुसार सिपहसालार असदुल्ला के नेतृत्व में राजापुर रियासत पर विजय प्राप्त की जाती है। उसमें कासिमखान की भूमिका अहम रहती है। पड़ोस की रियासत के रहनेवाले मलिका-ए-आलिया के चाचा-जान और उनका बेटा इम्तियाज को खत्म करने का हुक्म शाह कासिम खान और सिपहसालार को देता है। मगर असदुल्ला उन्हें कैद करके हिफाजत से रखता है। असदुल्ला और मंगलसिंह के बीच नूरशाह और आदमशाह को लेकर बातचीत होती है। सिपहसालार असदुल्ला के खिलाफ किस प्रकार योजनाएँ बनाई जाती है आदमशाह सारे मंत्रियों को खिलौनों की तरह किस प्रकार इस्तमाल करते हैं इस बात पर चर्चा होती है।

कासिम खान आदमशाह को इम्तियाज और चचाजान की मौत की खबर अत्यंत आनंदित मुद्रा में सुना देता है। आदमशाह नाटकीय मुद्रा में शोक प्रकट करता है। इतने में एक गुप्तचर सिपहसालार असदुल्ला के मौत की खबर आदमशाह को सुनाता है। असदुल्ला की मौत पर तर्क-वितर्क लगाए जाते हैं। वास्तविकतः आदमशाह ने ही मंगलसिंह का कत्ल करने का हुक्म दिया था। मलिका-ए-आलिया मंगलसिंह को गालियाँ देने लगती हैं। मगर मंगलसिंह उलटे उन्हीं को दोषी ठहराता है। असल में असदुल्ला, चचाजान, इम्तियाज आदि लोगों को

हिफाजत से रखता है। मंगलसिंह मलिका-ए-आलिया को फँसाने हेतु नाटकीय ढंग से उनके सामने पेश करता है। इनकी रूहें आदमशाह को कातील ठहराती हैं। तब मलिका-ए-आलिया को सब कुछ पता चलता है। आदमशाह को अब अपने कर्म पर पछतावा हो रहा है। दरबार की रौनक चली जाने के कारण वह निराश हैं। नूरशाह आदमशाह के कक्ष में प्रवेश कर उनको अपने राजा होने की खबर सुनाता है। असदुल्ला की आवाज आदमशाह को सुनाई देती है। असदुल्ला और मंगलसिंह आदमशाह को बता देते हैं कि हम सबने मिलकर नूरशाह को बादशाह बनाया है। आदमशाह मंगलसिंह, सिपहसालार असदुल्ला, इम्तियाज को देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है। आखिरकार इन्हीं लोगों की सहायता सेआदमशाह को कैद किया जाता है।

अंत में आदमशाह को जंजीरों में जकड़कर कोठरी में बंद किया जाता है। काल-पुरुष इन्हीं सत्ताधिशों को आगाह करता है कि कभी भी चापलुसों को सर पर चढ़ने मत दो, राजा से आह्वान करता है कि कभी घमंडी मत बनो। नेपथ्य से कहा जाता है कि 'यह कहानी कभी-भी खत्म नहीं हो सकती।' अंतिम दृश्य में वसुंधरा, कबीर, चक्रवर्ती सब मिलकर शासकों और नेताओं पर टिप्पणी करते हैं। श्रोत्रिय जी अंतिम दो वाक्यों से कहना चाहते हैं कि आम जनता ही सब कुछ होती है। शासक को उसीका खयाल रखना चाहिए नहीं तो वह एक दिन क्रांति पर जाएगी !

निष्कर्ष :-

इस प्रकार श्रोत्रिय जी ने प्रस्तुत नाटक के प्रथम अंक में 21 वी सदी के लोकतंत्र तथा दुवितीय एंक में 18 वी सदी की तानाशाही का वास्तविक चित्रण किया है। उन्होंने चक्रवर्ती और आदमशाह की सहायता से आज के उन राजनेताओं और आदमशाह की सहायता से आज के उन राजनेताओं को सचेत किया है जो स्वयंपर निर्भर नहीं हैं। चारित्र्यवान नहीं है। श्रोत्रिय जी ने प्रस्तुत नाटक दुवारा इस बात की ओर इशारा किया है कि सरकार बदलने से लोगों की आदतें नहीं बदलती वहीं आदमी नाम बदलकर आते हैं और अपना स्वार्थ साध लेते हैं।

2.3.1 कथ्य

फिर से जहाँपनाह श्रोत्रिय जी का इ.स. 1993 में प्रकाशित नाटक है। इसमें सत्ता और सत्ताधारी नेतागण, उनका भ्रष्ट व्यवहार, उनकी गलत नीतियाँ, लोकतंत्र की कमजोरियाँ आदि बातों पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत नाटक दो अंकों में लिखा गया है।

पहले अंक में 21 वीं सदी के लोकतंत्र का वास्तविक चित्र मिलता है तो दूसरे अंक में 18 वीं सदी के तानाशाही का चित्रण मिलता है। पहले अंक में जो पात्र चित्रित हैं वही पात्र दूसरे अंक में नाम बदलकर आते हैं।

श्रोत्रिय जी कहना चाहते हैं कि सत्ताधारी लोग (सभी) एक जैसे होते हैं। सत्ता बदलने से लोगों की आदतें नहीं बदलती।

प्रस्तुत नाटक 21 वीं सदी के लोकतंत्र और 18 वीं सदी के तानाशाहीं की कमजोरियों को उजागर करता है। लेखक इस नाटक द्वारा अनेक बातों को पाठकों के सामने लाना चाहता है। वह निम्नानुसार - 21 वीं सदी के लोकतंत्र का सही चित्रण, भ्रष्ट राजनेताओं पर फटकार, मंत्रियों की कामुक प्रवृत्ति पर प्रकाश, कानून और अंधी न्याय-व्यवस्था का चित्रण, लोकतंत्र और तानाशाही एक ही सिक्के के दो पहलू, वोट बँक के लिए सबकुछ न्यौछावर करनेवाले राजनेताओं पर फटकार, कबीर सूत्रदार के रूप में।

2.3.1.1 21 वीं सदी के लोकतंत्र का सही चित्रण :-

हमारे देश का लोकतंत्र दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र माना जाता है। श्रोत्रिय जी ने प्रस्तुत नाटक में हमारे देश के लोकतंत्र का वास्तविक चित्रण किया है। इस नाटक के पहले अंक में 21 वीं सदी का चित्रण है। श्रोत्रिय जी ने मंगलम (कारावास मंत्री), गुणगान (सचिव) त्यागमूर्ति (धन धंदा कमीशन मंत्री), अब्दुल्ला (विद्रोही पार्टी का एक नेता), अनंत चक्रवर्ती (मुखिया), वर्मा (गृह-वित्त मंत्री), कबीर (आम आदमी एवं सूत्रधार), वसुंधरा (विद्रोही पार्टी का एक नेता), जुही (प्रधान की स्टेनो) आदि पात्रों के माध्यम से देश के लोकतंत्र की खिल्लियां उड़ाई हैं। अनंत चक्रवर्ती इस लोकतंत्र के मुखिया है अर्थात सत्ताधारी पार्टी के अध्यक्ष हैं। इनका चित्रण श्रोत्रिय जी ने निहायत भ्रष्ट एवं ढोंगी आदमी के रूप में किया है। पार्टी के अन्य नेतागण भी स्वार्थी हैं। हर कोई अपना स्वार्थ साध लेने की जल्दी में रहता है। कबीर आम आदमी के रूप में पाठकों के सामने आता है जिसका कोई कसूर न होने पर भी अंत में उसे शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार श्रोत्रिय जी प्रस्तुत नाटक में अपने देश के लोकतंत्र का वास्तविक चित्र खिंचने में सफल हुए हैं।

2.3.1.2 भ्रष्ट राजनेता :-

प्रस्तुत नाटक के प्रथम अंक में नाटककार श्रोत्रिय जी ने भ्रष्ट राजनेताओं की पोल खुलवाने का महत्वपूर्ण काम किया है। अनंत चक्रवर्ती पार्टी के मुखिया हैं पर अत्यंत भ्रष्ट आदमी है। चपरासी के रूप में अपने नजदीक के रिश्तेदार की नियुक्ति माननीय मुखियाजी त्यागमूर्ति की सहायता से करते हैं, उम्र अधिक होने के कारण नियम शिथिल कर देते हैं। चक्रवर्ती का कथन द्रष्टव्य है - "हलो.... बेवकूफ, चपरासी की नियुक्ति है या गवर्नर की ? ....अच्छा, दल का कार्यकर्ता है..... चिपका दो.... अरे बेचारा गरीब है, उम्र तो अधिक होगी ही, नियम शिथिल कर दो।"[13]

सरकार के विरोध में लेख करनेवाले अखबार 'समय-सारथी' पर प्रतिबंध डालने के लिए त्यागमूर्ति को आदेश देते हैं। त्यागमूर्ति 'समय सारथी' पर प्रतिबंध डालते हैं। उसे अपनी बात कहने का अधिकार संविधान ने प्रदान किया है। चक्रवर्ती जुही नाम की स्टेनो के साथ नाजायज संबंध रखता है, उसकी हत्या करवाकर इल्जाम वर्मा पर डाल देता है। मिस्टर गुणगान एवं कारावास मंत्री मंगलम् भी चक्रवर्ती के चेले हैं। चक्रवर्ती को सब कुछ मानकर अन्य नेतागण सरकार चलाते हैं। इस प्रकार श्रोत्रिय जी ने नेताओं की पोल खोलने का काम किया है।

2.3.1.3 मंत्रियों की कामुक प्रवृत्ति पर प्रकाश :-

श्रोत्रिय जी ने एक ही नाटक में अलग-अलग समय को चित्रित किया है। एक ओर उन्होंने पहले एंक में 21 वीं सदी के लोकतंत्र का चित्रण किया गया है तो दूसरी ओर 18 वीं सदी के तानाशाही को चित्रित किया है। लोकतंत्र के मुखिया अनंत चक्रवर्ती पार्टी के मुखिया हैं इसीलिए उनके हाथ में सत्ता की सभी चाबियाँ हैं तो दूसरी ओर आदमशाह राज्य का प्रमुख एवं तानाशाह हैं। वे सर्व सत्ता के अधिकारी हैं। अनंत चक्रवर्ती अपनी स्टेनो जुही के साथ नाजायज संबंध रखते हैं। फलतः वह गर्भवती हो जाती है। चक्रवर्ती उसका कत्ल करते हैं और गृह-वित्त मंत्री वर्मा के नाम इल्जाम डाल देते हैं। दूसरी तरफ आदमशाह ने अनेक विवाह किए हैं फिर भी वह सईदा नामक नृत्यांगना से प्रणय की क्रिडाएँ करते हैं। आदमशाह नृत्यांगना सईदा से इश्क करते हैं। नाटककार ने इसका चित्रण किया है -

"हाजरा : (व्यंग्य से) हुजुर के इश्क को सलाम करती हूँ।

(सईदा से कड़ककर) बेशर्म चल हट यहाँ से।

(सईदा हड़बड़ाकर भाग खड़ी होती है। शाह उसी दिशा में मदहोश निगाहों से एकटक देखते हैं।)

शाह : (सईदा की दिशा में इशारा करते हुए हाजरा से) शर्मा गई। बड़ी लजीज चीज है।"[14]

शाह की पत्नी और मलिका-ए-आलिया हाजरा बेगम आदमशाह को फटकारती है मगर आदमशाह उसकी तरफ अनदेखा करते हैं। श्रोत्रिय जी इन दो पात्रों के दूवारा आज के उन नेताओं की तरफ उंगली निर्देश करते हैं जो जुही जैसी स्टेनो का जीवन बरबाद कर देते हैं। आज के अपने प्रजातंत्र में ऐसे अनेक नेतागण है जो अनंत चक्रवर्ती और आदमशाह की भूमिका अदा करते हैं।

2.3.1.4 अंधा कानून और अंधी न्याय व्यवस्था का चित्रण :-

विद्रोही पार्टी के नेता अब्दुल्ला, वसुंधरा और बलवान आगामी चुनाव में किस प्रकार जीत हासील की जाए इस बात पर चर्चा में लगे हैं। अब्दुल्ला सोचता है कि इस बार सरकार को गिराने हेतु कोई ठोस मुद्दा उठाने की आवश्यकता है। इसीलिए वह स्टेनो के गुम होने, उसपर बलात्कार करने उसका खून करने का इल्जाम चक्रवर्ती पर डाल देते हैं। चक्रवर्ती के हाथ में सरकार होने के कारण उसको कोई चिंता नहीं है। वास्तविकतः उसीने स्टेनो का कत्ल करवाया था परंतु वह इस मुद्दे को निपटाने हेतु एक आयोग का गठन करवाता है। जिस आयोग का गठन किया गया था वह बिल्कुल विपरीत परीणाम देता है। विद्रोही पार्टी के नेताओं को इसमें फँसाया जाता है। साथ ही नेक और ईमानदार मंत्री वर्मा को फाँसी की सजा सुनाई जाती है। चक्रवर्ती न्यायाधीश होकर बेकसूरों को गुनहगार और गुनहगारों को बेकसूर ठहराता है -

''चक्रवर्ती : माननीय न्यायालय भूतपूर्व गृह-वित्त मंत्री वर्मा को मृत्युंदड देता है। सुश्री वसुंधरा और कबीर को आजीवन कारावास। माननीय मंगलम्, माननीय त्यागमूर्ती और श्री कालिका प्रसाद को ससम्मान दोषमुक्त किया जाता है।''[15]

इस प्रकार श्रोत्रिय जी स्पष्ट करना चाहते हैं कि हर बार ऐसा ही होता है। लोकतंत्र में जो सरकार सत्ता पर होती है वह लोकतंत्र के सभी महत्वपूर्ण अधिकारों को अपने नियंत्रण में रखती है। ऐसी परिस्थिती में कानून और न्याय-व्यवस्था अंधी हो जाती है।

2.3.1.5 एक सिक्के के दो पहलू :-

'फिर से जहाँपनाह' इस शीर्षक से ही स्पष्ट होता है कि नाटककार ऐसी व्यवस्था का चित्रण करना चाहता है जो कभी बदलती नहीं। फिर वह लोकतंत्र हो या तानाशाही। लोकतंत्र में जनता अपने प्रतिनिधि नेताओं को संसद में भेजती है। यही नेतागण उसी जनता को फँसाते है जिन्होंने उन पर विश्वास जताया था। तानाशाही में एक ही शासक सारी व्यवस्था को अपने हाथ में लेता है। अपने देश की न्याय-व्यवस्था, सुरक्षा-व्यवस्था वही नियंत्रित करता है। तानाशाही में लोगों को शासक के आगे बोलने का बिल्कुल अधिकार नहीं होता। वह किसी को भी सजा दे सकता है। अपने हठ के लिए कुछ भी कर सकता है, वह अपने को सत्ता का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी समझता है। श्रोत्रिय जी ने कबीर के द्वारा अपने विचारों को व्यक्त किया है। प्रताजंत्र और तानाशाही को लेकर कबीर के विचार इस प्रकार हैं -

''खबरदार वसुंधरा ! प्रजातंत्र चाहे जितना सड़ा-गला निकम्मा हो, उसका विकल्प तानाशाही नहीं हो सकती..... नहीं हो सकती तानाशाही प्रजातंत्र का विकल्प !''[16]

नाटककार यहाँ स्पष्ट करना चाहते हैं कि जिस प्रकार पुराणे जमाने के तानाशाह राजकारोबार चलाते थे उसी प्रकार लोकतंत्र के मुखिया भी चलाते हैं। जिस प्रकार तानाशाह के सलाहकार, मंत्री भ्रष्ट व्यवहार करते हैं उसी प्रकार लोकतंत्र के नेतागण भी भ्रष्ट हैं। जनता के हित के बजाए अपना स्वार्थ साध लेने में वे धन्य मानते हैं। फलतः लोकतंत्र और तानाशाही में जादा अंतर नजर नहीं आता।

2.3.1.6 शक्की राजनेता :-

नाटककार श्रोत्रिय जी ने पहले अंक में जिस लोकतंत्र का चित्रण किया है उसके मुखिया अनंत चक्रवर्ती हैं और दूसरे अंक में जिस तानाशाही का वर्णन किया है उसके प्रमुख शासक आदमशाह हैं। अनंत चक्रवती और आदमशाह दोनों भी शासक हैं। चक्रवर्ती 21 वीं सदी के और आदमशाह 18 वीं। अनंत चक्रवर्ती की सरकार में वर्मा, मंगलम्, त्यागमूर्ति और गुणगान आदि मंत्री महत्वपूर्ण पद संभालते है उसी प्रकार आदमशाह के राज्य में असदुल्ला, शफीखान, मंगलसिंह, नूरशाह आदि। चक्रवर्ती हमेशा वर्मा, मंगलम् त्यागमूर्ति और गुणगान जैसे मंत्रियों की ओर शक की निगाह से देखते हैं। उन्हें डर है कि कहीं उनके विरोध में कुछ अफरातफरी न हो जाए। वह मिस्टर वर्मा पर हमेशा अविश्वास करते हैं। बिल्कुल इसी प्रकार आदमशाह भी सिपहसालार असदुल्ला, कासिम खान, मंगलसिंह आदि मंत्रियों पर हमेशा शक करता है इन सब मंत्रियों को समाप्त करना है। राज्य की बीगड़ी हुई अवस्था को सुधारने हेतु हजरा शाह से बिनती करती है कि किसी नेक इंसान को मुकर्रर करें। लेकिन शाह को नूरशाह ठीक नहीं लगता। उदाहरण दृष्टव्य है -

''हाजरा : नूर मियाँ कैसे रहेंगे ? आपके सगे छोटे भाई है -

शाह : (व्यंग्य से) नूर मियाँ (भेद से) हाँ, नूर मियाँ इन दिनों आपके कुछ ज्यादा ही करीब हैं !

हाजरा : (बिगड़कर) ओफफो..... शक्की इंसान का कोई इलाज नहीं।''[17]

नाटककार श्रोत्रिय जी ने अलग-अलग काल में जन्मे अलग-अलग नेताओं की इसी प्रवृत्ति का वर्णन किया है।

2.3.1.7 गुनहगार राजनेता :-

अनंत चक्रवर्ती एक देश के मुखिया होने के बावजूद एक खूंख्वार गुनहगार की तरह बर्ताव करते हैं। चक्रवर्ती अपने काली नामक गुंडे द्वारा कश्यपजी का कत्ल करवाते हैं। उनके मृत्यु की खबर बाहर पहुँचते ही शोक समाचार भी देते हैं। इसी प्रकार दूसरी तरफ अपनी पत्नी के चचाजान और इम्तीयाज साथ ही साथ सिपहसालार असदुल्ला को खत्म करने की जिम्मेदारी कासीमखान को सौंप देते हैं। आज के नेताओं का चरित्र इन नेताओं से जादह अलग नहीं है। वह राजनेता कम और खूंख्वार गुनहगार जादह दिखाई देते हैं। गुनहगारों

का व्यक्तित्व होने के कारण ही हमारे देश में ऐसे नेता राजनीति में बसे हुए हैं। श्रोत्रिय जी ने इसी बात की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है।

2.3.1.8 व्यवस्था के विरोध में विद्रोह :-

श्रोत्रिय जी ने जो तीन नाटक लिखे हैं वह कहीं न कहीं राजनीति और नेताओं से संबंध रखते हैं। नाटककार को इस पूरी व्यवस्था में खोट नजर आती है। राजनेताओं पर इन्होने खुलेआम टीका टिप्पणी की है। 'फिर से जहाँपनाह' यह नाटक राजनेता एवं राजनीति को लेकर लिखा गया है। नाटककार अनंत चक्रवर्ती और आदमशाह जैसे राजनेताओं को लोगों के सामने नंगा करना चाहते हैं। उनका असली रूप भी समाज को दिखाना चाहते है।

इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने समकालीन और मध्ययुगीन परिवेश के द्वारा राजनेताओं पर प्रहार किया है। नाटककार ने तीनों नाटकों में राजनेताओं पर प्रहार किया है। साथ ही साथ 'इला' और 'साँच कहूँ तो' इन दो नाटकों में नारी पीड़ा को चित्रित किया है। 'साँच कहूँ तो' इस नाटक में नवयुवकों की धनलोलुपता एवं विदेश का आकर्षण इन बातों पर भी प्रकाश डाला है। इस प्रकार श्रोत्रिय जी के तीनों नाटक कथ्य की दृष्टि से सशक्त है।

निष्कर्ष

प्रभाकर श्रोत्रिय जी के तीनों नाटक पौराणिक एवं मध्ययुगीन पृष्ठभूमि के आधार पर आधुनिक समस्याओं को चित्रित करने में सफल हुए हैं। उनका प्रथम प्रकाशित 'इला' नाटक नारी की पीड़ा एवं तत्कालीन राज-व्यवस्था को चित्रित करता है। 'साँच कहूँ तो' मध्यकालीन ऐतिहासिक कथावस्तु पर आधारित होकर भी नारी की समस्याओं को चित्रित करता है। उनका तीसरा नाटक 'फिर से जहाँपनाह' लोकतंत्र और तानाशाही व्यवस्था द्वारा राजनेताओं के भ्रष्ट व्यक्तित्व को प्रकाशित करता है।

श्रोत्रिय जी का प्रथम नाटक 'इला' पुराणकालीन नारी की व्यथा को स्पष्ट करता है। साथ ही मनु जैसे शासक की मानसिकता पर भी प्रकाश डालता है। प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने लिंग-परिवर्तन जैसी वर्तमान युग की गंभीर समस्या की ओर इशारा किया है। 'इला' द्वारा श्रोत्रिय जी उन नारियों की पीड़ा को व्यक्त करना चाहते हैं जिनका लिंग-परिवर्तन हुआ या जिनको जन्म से पहले मारा गया।

श्रोत्रिय जी का दूसरा नाटक 'साँच कहूँ तो' मध्यकालीन राजव्यवस्था द्वारा शासकों के मनमाने व्यवहार को स्पष्ट करता है। इसके साथ ही अनमेल विवाह जैसी कुप्रथा पर भी प्रकाश डालता है। आज के

नवयुवक धन और ऐश्वर्य की अपेक्षा से विदेश चले जाते हैं। इसका चित्रण उन्होने बीसलदेव की उड़ीसा यात्रा से किया है। इस यात्रा में उसे धन तो प्राप्त होता है मगर मानसिक और शारीरिक पीड़ा को सहन करना पड़ता है। वर्तमान युगीन युवकों का विदेश की चकाचौंध का आकर्षण, धनलालसा, किंतु मानसिक पीड़ा को प्रकट किया है। इस प्रकार यह नाटक एक सफल नाटक है।

श्रोत्रिय जी का अंतिम नाटक 'फिर से जहाँपनाह' लोकतंत्र और तानाशाही व्यवस्था के दुष्परिणामों को स्पष्ट करने में सफल हुआ है। नाटक के पहले अंक में 21 वी और दूसरे अंक में 18 वी सदी का चित्रण नाटककार ने किया है। पहले अंक में लोकतंत्र के उन राजनीतिज्ञों के चरित्र का पर्दाफाश किया है जो अक्सर अपनी कुर्सी बचाने के प्रयास में रहते हैं और दूसरे अंक में उन तानाशाहों का चित्रण किया है जो मनमाने व्यवहार से खुद अपनी कुर्सी गँवातें हैं। इस प्रकार श्रोत्रिय जी के तीनों नाटक सफल नाटक हैं।

संदर्भ संकेत :-

1. प्रभाकर श्रोत्रिय - 'इला', पृ. 84
2. वही, पृ. 24
3. वही, पृ. 26
4. वही, पृ.
5. वही, पृ.
6. वही, पृ. 24
7. वही - 'साँच कहूँ तो', पृ. 37
8. वही, पृ. 33
9. वही, पृ. 40
10. वही, पृ. 74
11. वही, पृ. 86
12. वही, पृ.
13. वही - 'फिर से जहाँपनाह', पृ. 11
14. वही, पृ. 58
15. वही, पृ. 48
16. वही, पृ. 50
17. वही, पृ. 60